ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

जान पर बन आती है नीलकंठ के

रविवारीय, 13-19 अक्टूबर 2019, वर्ष- एक, अंक-10,रांची | हिन्दी साप्ताहिक | R.N.I. No. JHAHIN 00962 | कुल पृष्ठ 4 | मूल्य 2 रूपये

सूचना

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

2022 तक नया झारखंड बनायेंगे:सीएम

प्रतिनिधि

चाईबासा/रांची: मुख्यमंत्री रघुवर दास ने विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों और बुद्धिजीवियों के साथ बैठक की उन्होंने कहा कि समाज उन्हीं लोगों को याद करता है जो समाज के लिए कुछ करते हैं। आप भी समाज के लिए कुछ ऐसा काम करें कि लोग सदियों तक आपको और आपके योगदान को याद रखें। समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान दें. गरीबों की सेवा करें। मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने चाईबासा सर्किट हाउस में विभिन्न सामाजिक-धार्मिक संगठनों और बुद्धिजीवियों के साथ बैठक में ये बातें कही। उन्होंने कहा कि गुमराह करने वाली ताकतों से लोगों को सचेत करें । मुख्यमंत्री ने विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों को कहा कि लोगों को जागरुक करने में वे अपनी भूमिका निभाएं। लोगों को सही बात की जानकारी दें। ताकि लोगों के सहयोग से 2022 तक न्यू झारखंड बने।

सीसीएल ओबीएस की ओर से खाते में साढे चार लाख रू. भेजे गये

रांची: सी.सी.एल. ऑफिसर्स बेनिवोलेन्ट सोसाईटी (ओ.बी.एस.) की ओर से सीएमडी गोपाल सिंह के निर्देशानुसार श्रीमती राधा हलवाई के बैंक खाते में आरटीजीएस के माध्यम से रू. 4,50,000/- (चार लाख पचास हजार) ट्रांसफर किया गया। ज्ञातव्य हो कि श्रीमती राधा हलवाई के पति स्व. सुभाष हलवाई सीसीएल मुख्यालय रांची में महाप्रबंधक (वित्त) के रूप में कार्यरत थे। उनका देहांत 01 अक्टूबर, 2019 को मेडिका अस्पताल, रांची में ईलाज के दौरान हुआ था। ओबीएस की टीम के कोषाध्यक्ष संजीव प्रसाद एवं श्री विनय कुमार शंकर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने उनके परिवार से मिलकर आवश्यक कार्रवाई करते हुए उनके बैंक खाते में पैसा भेजवानें में अहम भूमिका निभाई।

झारखंड बनने से पहले भी बड़ा तालाब के सौंदर्यीकरण का मजाक होते रहा है, लेकिन आज भी जलकुंभी और गंदगी ही इसकी पहचान हैं

बड़ा तालाबः सफाई का प्रहसन

जलकुंभी से घिरे स्वामी विवेकानंद

फोटो : उज्ज्वल

किनारों को कंक्रीट से बांध दिया गया, अब वर्षाजल इसमें नहीं आता

वरीय संवाददाता

रांची : राजधानी रांची के बीच बड़ा तालाब जिसे रांची लेक भी कहते हैं अब विवेकानंद सरोवर है जो शहर का एक धरोहर है। रांची पहाड़ी चढने वाले इस तालाब को बड़े ही कौतूहल से देखते हैं। पहाड़ी से देखने पर यह तालाब रांची की खुबसूरती में चार चांद लगाता है। विशाल गोल आकार का तालाब और बीच में बने टापू। लेकिन दूर से खुबसूरत दिखने वाला यह तालाब करीब से जाकर देखने पर मायूस करता है। ज्ञात हो कि, बड़ा तालाब जलकुंभी, गंदगी, प्रदूषित जल का पर्याय है। झारखंड बनने से पहले से ही इस तालाब को सजाने संवारने का प्रहसन चलते रहता था। कुछ प्रयास भी हुये, लेकिन बड़ा तालाब की किस्मत अब तक नहीं संवरी। रांची के पुराने बाशिंदे जिन्होंने साफ सुथरे जलाशय के रूप में बड़ा तालाब को देखा है वो अब सिर्फ अतीत के इसके रौनक की कथा सुनाते हैं।बड़ा तालाब सदैव उपेक्षित ही रहा, इसके चारो ओर की सड़कें जर्जर थी, और इधर से गुजरने वाले बदबू से अपना नाक ढक लेते थे। राज्य बनने के दो दशक बाद इसे संवारने के नाम पर टापू पर विवेकानंद की मूर्ति लगा कर अनावरण कर दिया गया, इसमें पूल बना, चारो ओर कंक्रीट से बांध कर फेंसिंग हो गयी, पर मूल जरूरत प्रदूषण से मुक्ति और पर्यावरण अनुकूल इसे आज भी नहीं बनाया गया। विसर्जन, वाहन धोने, जलकुंभी के कारण तालाब ज्यादा प्रदूषित है।

कई दुर्घटनाओं का गवाह रहा है बड़ा तालाब

रांची लेक या बड़ा तालाब कई दुर्घटनाओं का गवाह रहा है। 1998 में भी यहां पैडल बोट वाले नाव चलते थे। बड़ा तालाब में दो मुख्य टापू हैं। एक बार किसी युवक ने पैडल बोट से टापू पर ले जाकर किसी युवती के साथ दुष्कर्म की कोशिश की। इस वाकये के बाद यहां बोट चालन बंद कर दिया गया। लंबे समय बाद फिर से बोट चालन की अनुमति दी गयी, तो उद्घाटन के दिन ही लोगों से भरी बोट तालाब में पलट गयी और कुछ लोग डूब गये। कहा जाता है कि बोट पूर्व मुख्य सचिव सजल चक्रवर्ती चला रहे थे। इसके अलावा कुछ साल पहले एक पिता पुत्र बोलेरो समेत बड़ा तालाब में घुस गये जिसमें बच्चे की डूब कर मौत हो गयी थी। एक समय यहां का पानी इतना प्रदूषित था कि लोग बदबू से इधर से गुजरने में परहेज करते थे और इसमें से पकड़ी गयी संक्रमित मछली खाकर पुरानी रांची के एक युवक की मौत हो गयी थी। तब सेवा सदन की नालियां बड़ा तालाब में गिरती थी। नगर निगम के कर्मचारियों ने एक बार यहां सफाई के दरम्यान तत्कालीन मेयर रमा खलखो का इतना विरोध किया कि उनकी आंखों में आंसू आ गये थे।

52 एकड़ में फैला है बड़ा तालाब,कर्नल ओंसले ने बनवाया था

1842 में ब्रिटिश कर्नल ओंसले ने बड़ा तालाब का निर्माण करवाया था। यह तकरीबन 52 एकड़ में फैला हुआ है और गोलाकार है। कर्नल ओंसले ने समुद्र से 2100 फुट ऊंचे रांची शहर में जलस्तर को बरकरार रखने के खयाल से यह तालाब बनवाया था। कहते हैं तब कैदियों की मदद से इस तालाब की खुदाई की गयी थी। वर्तमान में रांची के अन्य तालाबों की तरह इसके भी किनारों को कंक्रीट से पाट दिया गया है और इसके जलसंचय के सोर्स को खत्म कर दिया गया है। बारिश के बाद भी ये हालत है कि दुर्गा पूजा मुर्ति विसर्जन में भी पाया गया कि जलस्तर घटा हुआ है। तालाब के किनारे एक एतिहासिक घाट भी है जो जर्जर अवस्था में है। जलकुंभी से पट चुका बड़ा तालाब में मॉनसून के खत्म होने पर भी जलस्तर सामान्य से नीचे है। जानकारों की माने तो टापू तक बने पुल की इंजीनियरिंग भी गड़बड़ है।

मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना के तहत 452 करोड़ रुपये का वितरण

- मुख्यमंत्री ने चाईबासा में - कोल्हान प्रमण्डल के किसानों को दी सौगात।
- राज्य के 11 लाख किसानों में 452 करोड़ रुपये का हुआ वितरण
- राज्य के 26 लाख किसानों के बीच लगभग 900 करोड़ का वितरण हुआ पूरा।
- दीपावली तक दूसरी किस्त और दिसंबर तक तीसरी किस्त की राशि भी मिल जायेगी।
- मुख्यमंत्री ने चरण पादुका योजना के तहत आदिम जनजाति परिवार के लिए 10 हजार चप्पल का वितरण किया..मुख्यमंत्री ने सुना सबर और सुमित्रा सबर को चप्पल पहनाया।
- मुख्यमंत्री ने कहा किसान पशुपालन पर भी ध्यान दें।

रांचीः पूरे राज्य के 11 लाख किसानों के बीच मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना के तहत 452 करोड़ रुपये का वितरण किया गया। इस वितरण के बाद राज्य के 26 लाख किसानों के बीच लगभग 900 करोड़ का वितरण पूरा हो जाएगा। इस योजना के तहत राज्य के 35 लाख किसानों के बीच सभी किस्तों को मिलाकर 3000 करोड़ की राशि दी जाएगी।अन्नदाता किसान राज्य की संस्कृति की धुरी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि दशकों तक किसानों की समृद्धि और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल नहीं की गई। किसान आत्महत्या को मजबूर हुए। वे कर्जदार बने। लेकिन 2014 के बाद किसानों की समृद्धि के लिए पहल की गई।

खाता में रहेगा पैसा तो हाथ फैलाने की नहीं होगी जरूरत

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को राज्य सरकार की मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना का लाभ मिल रहा है। किसान सम्मान निधि योजना का तीसरा किस्त जल्द किसानों को मिलेगा। किसानों के खाते में पैसा रहने से उन्हें कृषि कार्य हेतु किसी के समक्ष हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और वे आसानी से कृषि से संबंधित संसाधन जुटा लेंगे । जो किसान इस योजना का लाभ लेने से वंचित रह गए हैं वे परेशान ना हों। अपना निबंधन प्रखंड कार्यालय में ग्राम सभा से अनुमति प्राप्त कर अवश्य कराएं। किसानों को उनका हक मिले यह हमारा लक्ष्य है।

बीएयू द्वारा झारखण्ड में मीठी क्रांति को बढ़ावा : डॉ आरएस कुरील

चीन सबसे बड़ा मधु उत्पादक देश है। लेकिन उत्कृष्टता के कारण भारतीय मधु की काफी मांग है। झारखंड के छोटे किसानों के लिये मधुमक्खी पालन में बहुत रोजगार है: **कुलपति बीएयू, रांची**

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करते ग्रामीण

प्रमुख संवाददाता

रांची : झारखंड राज्य के जंगल करंज, जामुन, नीम, सखुआ, सागवान, शीशम, सेमल, युक्लिप्टस, इमली एवं बकाईन आदि पेड़ों से भरे पड़े है. यहाँ की जमीन में लीची, अमरुद, केला, पपीता, सहजन, सरगुजा, तीसी, सरसों एवं अन्य साग - सब्जियों की बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। इनसे शहद उत्पादन में मदद एवं लाभ मिलता है और शहद का उत्पादन भी अधिक होता है। इसके आधार पर वैज्ञानिक झारखंड राज्य को मधुमक्खी पालन के लिए काफी उपयुक्त बताते है. मधुमक्खी पालन से किसान कम लागत में कई वर्षों तक लाभ ले सकता है। उक्त बातें बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आरएस कुरील ने झारखण्ड राज्य में मधुमक्खीपालन की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए बताई।

कुलपति ने बताया कि राज्य में करीब 90 प्रतिशत किसान छोटे और मध्यम भूमि के जोतदार है। इन किसानों के सामाजिक - आर्थिक विकास तथा बेहतर रोजगार सृजन हेतु मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में काफी अवसर है। विश्व में चीन द्वारा सबसे अधिक मधु उत्पादन के बावजूद विदेशों में भारतीय मधु की काफी मांग है। देश में मौजूद 200 मधुमक्खी कालोनी से करीब एक करोड़ ग्रामीण आबादी को रोजगार मिल रहा है. झारखण्ड राज्य के करीब तीन हजार किसान मात्र ही मधुमक्खी पालन से जुड़े है. जबकि राज्य में उपलब्ध संसाधन मधुमक्खी पालन हेतु काफी उपयुक्त है. मधु के व्यावसायिक उत्पादन एवं इसके उत्पादों के निर्माण से काफी लाभ कमाया जा सकता है. किसानों की आय दुगुनी करने के प्रयासों में मधुमक्खी पालन क्षेत्र में बहुत ज्यादा संभावना है. ग्रामीण क्षेत्र में इसे बढ़ावा देने से इसे अतिरिक्त आय के बेहतर ..... *शेष पेज 3 पर*

पशु नस्ल सुधार के लिये कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम

संवाददाता

रांचीः झारखड स्टेट इम्पलीमेंटिंग एजेंसी फॉर कैटल एंड बुफैलो डेवलपमेंट द्वारा राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम 2019-20 झारखंड के 24 जिलों में 15 सितंबर से 15 मार्च 2020 तक चलाया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राज्य में **पशु नस्ल के सुधार कार्यक्रम** को मजबूत करने, कृत्रिम गर्भाधान के प्रति जनजागरण करते हुये कृत्रिम गर्भाधान आच्छादन को 70 प्रतिशत तक विस्तारित करना है। प्रत्येक जिले के 100 गांवों को योजना में शामिल किया गया है। इस योजना में भारत सरकार 16 करोड़ का अनुदान दे रही है। गर्भाधान हेतु सभी आवश्यक सामग्री जे.एस.आई.ए. उपलब्ध करवायेगी। प्रत्येक कृत्रिम गर्भाधान पर कार्यकर्ताओं को 50 रू. वत्स उत्पन्न होने पर 100 रू. एवं प्रति पशु टैगिंग पर 3 रू. प्रोत्साहन राशि के रूप में दिया जायेगा। योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले तीन कार्यकर्ताओं को राज्य द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जायेगा एवं उनका नाम राष्ट्रीय पुरस्कार के लिये भी भारत सरकार को भेजा जायेगा।

योजना के प्रचार प्रसार के लिये प्रत्येक गांव में बैनर, दीवार लेखन एवं पंप्लेट बांटकर जनजागरण किया जा रहा है। कृत्रिम गर्भाधान के लिये जे.एस.आई.ए. ने अब तक 2 लाख 5 हजार फ्रोजेन सीमेन विभिन्न एजेंसियों से मंगवाया है।

डॉ. कृष्णकांत तिवारीः स्टेट नोडल पदाधिकारी

राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान योजना (किसान कल्याण अभियान) की शुरूआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 11 जुलाई को मथुरा में किया था। प्रत्येक पशु का चिन्हितिकरण कर निबंधन तथा कृत्रिम गर्भाधान, गर्भ जांच तथा वत्स उत्पति का पूरा डाटा आइ.एन.ए.पी.एच. वेब पोर्टल पर उपलब्ध करवाया जायेगा। इस योजना का परिणाम 2022 तक पूरे देश में दिखाई देने लगेगा।

डॉ. दयानंद प्रसादः मुख्य मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी

आपदा नियंत्रण में भारत की गति धीमी

एजेंसियां

प्राकृतिक आपदाएं दुनिया के लगभग सभी देशों में होती हैं और यह जिंदगी के अस्तित्व में आने के बाद से मानव जाति के लिए एक आम बात है। प्राकृतिक आपदाओं में तूफान, भूकंप, चक्रवात, हिमस्खलन और सुनामी , बाढ़ शामिल हैं। इस दिवस की गतिविधियां समाज और लोगों को उन खतरों के बारे में जानकारी देती हैं जो प्राकृतिक खतरों का कारण बनती हैं।

विश्व आपदा नियंत्रण दिवस का आयोजन प्रति वर्ष 13 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस वार्षिक आयोजन का केंद्र स्थानीय, स्वदेशी और पारंपरिक गतिविधियों पर है। राष्ट्रीय आपदा के निवारण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस की शुरुआत वर्ष 2009 से शुरू हुई। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्राकृतिक आपदा को कम करने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का पालन करने का निर्णय लिया। बाद में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 64/200 रिज़ॉल्यूशन, जो 21 दिसंबर 2009 को पारित किया गया था, और एक निश्चित तारीख हर साल की 13 अक्टूबर को प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने के लिए तय की गई। इस दिवस का एजेंडा लोगों के बीच जागरूकता को बढ़ाने और उन्हें दुनिया भर में आपदाओं के खतरे को कम करने के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना था। इसके तीसरे विश्व सम्मेलन में यूएन को उन लोगों द्वारा की गई लापरवाही से अवगत कराना था जिनसे पिछले साल की तुलना में अधिक संख्या में आपदा से संबंधित मौत हुई थी। इस आयोजन में लाखों लोगों को इससे निपटने के लिए आगे आने और उनके प्रयासों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे इस खतरे को समझ सके जिसके कारण लोगों को जान-माल का नुकसान हुआ है। ये लोग जागरूकता बढ़ाने के अभियानों में शामिल होने के लिए दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं और प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम को कम करने के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस पर कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।युवाओं को जोड़ने के साथ ही विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के कर्मचारी इस दिन ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करते हैं। स्वयंसेवक कार्यक्रमों की संख्या ऑनलाइन आयोजित करके मीडिया प्रमुख भूमिका निभाता है।

भारत : एक बड़ा देश है और भारत में आपदाओं की घटना अपेक्षाकृत बाकी देशों से अधिक है लेकिन आपदाओं से निपटने की गति बेहद धीमी है। अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा नियंत्रण दिवस पर लोगों को इस संघर्ष में शामिल होने के लिए लोगों को खुद असली पर्यावरण खतरों से अवगत कराने की बहुत आवश्यकता है। हालांकि इस दिन प्राकृतिक आपदाओं में कमी लाने का प्रचार करने, जागरूकता फैलाने, प्रसार करने और आपदा प्रबंधन के तरीके को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में उत्सव मनाया जाता है जो जलवायु परिस्थितियों में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। भारत विशाल भौगोलिक विविधता और विशाल विस्तार का देश है। इसके अलावा भारत दुनिया में दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। जब निरंतर हस्तक्षेप के साथ इस तरह की भौगोलिक परिवर्तनशीलता जुड़ती है तो देश के लोग मानव निर्मित और प्राकृतिक खतरों के प्रति कमजोर पड़ते हैं। आपदाओं से जोखिम हर समुदाय के लिए अलग-अलग है। समाज में मनोवैज्ञानिक तैयारियां भी आपदाओं के जोखिम को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भूकंप, दुर्घटना, बाढ़, सुनामी, आग आदि जैसी घटनाओं के लिए उच्च प्रशिक्षित टीमों की आवश्यकता होती है। आपदा प्रबंधन के लिए टीमों का प्रशिक्षण आजकल कई देशों में किया जा रहा है और इसी तरह भारत में भी किया जाना चाहिए। एक उचित आपदा प्रबंधन मानव जाति के बने सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। यदि हम सफलतापूर्वक एक आदर्श वैज्ञानिक प्रबंधन की योजना तैयार करते हैं तो संभव है कि आपदा के प्रभाव को कम कर सकेंगे।

- आपदाएं होंगी। हम पूरी तरह से दुर्घटनाओं से नहीं बच सकते क्योंकि हम प्रकृति की गोद में रह रहे हैं और इस संबंध में हमारा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। चूंकि हमें प्राकृतिक वातावरण में रहने की जरूरत है हमें दुर्घटनाओं के बारे में थोड़ा और सावधान रहने की जरूरत है।
- प्राकृतिक आपदा नियंत्रण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस 13 अक्टूबर को प्राकृतिक आपदा के बारे में जागरूकता फैलाने और इस संकट को प्रबंधित करने के विभिन्न तरीकों के साथ मनाया जाता है।
- इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर प्रीपेयरड्नेस एंड रिस्पांस 1962 में स्थापित एक संगठन है। यह एक गैर लाभकारी संगठन है जिसमें स्वयंसेवक, पेशेवर और संगठन शामिल हैं जो 4 दशक से प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ एक रक्षा प्रणाली विकसित करने का काम कर रहा है।

विश्व आपदा नियंत्रण दिवस

SENDAI 7 TARGETS CAMPAIGN

13 OCTOBER

INTERNATIONAL DAY FOR DISASTER RISK REDUCTION

बालाजी डेंटल केयर

Address: Shiv Bhawan, Laah Kothi, Ratu Road, Ranchi-5 Ph. 9006833759

जलाशयों की सफाई सिर्फ छठ में क्यों?

अभी पर्व त्यौहारों का मौसम चल रहा है। दशहरे के खत्म होते हीं दीपावली और छठ की तैयारी शुरू हो जाती है। यह एक सुखद आश्चर्य की बात है कि हमारे पर्व त्यौहार बहुत ही वैज्ञानिक दृष्टि से बने हुये हैं। जहां दिवाली के बहाने घरों की वार्षिक साफ सफाई रंगाई पुताई हो जाती है वहीं महापर्व छठ को जलाशय के किनारे बने घाटों पर मनाने की परंपरा से तालाबों, नदियों, झीलों की सफाई भी हो जाती है। अब दुर्गा पूजा संपन्न हो गया है और सभी तालाबों, नदियों की साफ सफाई की मांग उठ रही है। अखबारों में घाटों के सफाई की मांग की खबरें प्रकाशित हो रही हैं। महापर्व छठ के आते आते अमूमन प्रत्येक घाटों और जलाशयों की सफाई कर दी जाती है और इन घाटों पर बहुत ही धूम धाम से छठ मनाया भी जायेगा। इस काम में सरकार, नगर निगम के अलावा जनभागीदारी भी रहती है, लेकिन छठ पर्व के समाप्त होते ही ये सारी जनभागीदारी और सरकार की जिम्मेवारी खत्म हो जाती है और अगले वर्ष तक ये जलाशय गंदगी और प्रदूषण का शिकार होते हैं। हालांकि अब प्लास्टिक को लेकर आम लोगों में जागरूकता बढी है और संभव है इसका प्रभाव घटे, लेकिन रांची शहर में स्थित कांके डैम के चारो ओर छठ व्रत के समापन के बाद प्लास्टिक के कटोरों, प्लेटों और ग्लासों का अंबार दिखता है। ये सब उन्हीं घाटों पर दिखता है जिसे महज एक दिन पहले सभी मिलकर साफ किये थे और जल छिड़काव करके झाड़ू लगाये गये थे।

> आश्चर्य की बात है कि छठ पर्व में जलाशयों के किनारे जिस घाट को हम दस दिन तक खुद कुदाल लेकर साफ करते है, पानी से शैवाल और कचड़ा निकालते हैं। पुण्य कमाने के उद्देश्य से समर्पित होकर उसे सजाते हैं , जगह के लिये मार पीट तक करते हैं। उसी घाट को छठ समाप्ति के बाद प्लास्टिक और पूजा सामग्री के विसर्जन से प्रदूषित कर अगले साल तक के लिये बिल्कुल भूल भी जाते हैं।

सरकार को अगर हम छोड़ भी दें तो क्या ये आम लोगों की जिम्मेवारी नही बनती कि जिस घाट और जलाशय को हम दो दिन बहुत ही आस्था से देखते हैं, और पूजा करते हैं उसकी सुध आगे भी लें और उसे प्रदूषित करने से परहेज करें, समय समय पर उसकी साफ सफाई का भी ध्यान रखें। वहां मरे हुये पशुओं को फेकने से लेकर, कचड़ा डंप करने और नाला बहाने तक का काम होता है। आम आदमी आस्थावश भी थोड़ा जागरूक हो जाये तो एक भी जलाशय प्रदूषित नहीं होगा।

जुआ खेलने का आदी है भारतीय किसान

संतोष उरांव

जुआ एक ऐसा शब्द जिससे शायद ही कोई परिचीत न हो। जुआ ने कितने ही घरों को उजाड़ा है। यहां तक कि कई बड़े युद्धों का कारण और साक्षी रहा है। जुआ अमीरों का या फिर प्रमादी,अपराधी चोर उचक्कों का शगल रहा है लेकिन यदि मैं कहूं कि किसान सबसे बड़ा जुआरी है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। संभव है आप मेरी बात पर विश्वास न करें। लेकिन यही सच है। किसान जो मॉनसून की अनिश्चितता से पूर्व खेती के लिये चिलचिलाती धूप में तैयारी करता है, लेकिन वह हर साल जुआ खेलता है मॉनसून की अनिश्चिता के साथ। समय पर बारिश हो गयी, तो ठिक लेकिन हर साल उसके साथ धोखा ही होता है। इस वर्ष भी मॉनसून ने शुरूआती दिनों में जरूरत के वक्त धोखा दिया धान के बिचड़े सूखने लगे थे। बाद में खूब बारिश हुयी। यहां वो कहावत याद आ जाती है कि ***का बरखा जब कृषि सूखाने*** । किसानों के लिये जुए में दूसरी मार हाइब्रीड बीजों का है। परंपरागत बीजों से उपज कम होने लगी तो बीज माफियाओं ने इसका भरपूर लाभ उठाया है। भोले किसानों को पहले शंकर हाइब्रीड बीजों आदी बनाया और आगे चलकर उन बीजों के दाम बढाते चले गये। जानकारी एवं तकनीकी ाान के अभाव में किसान अच्छी उपज के लिये इन संकर बीजों को अपनी खेतों में लगाये। इन बीजों का स्वभाव वातावरण, तापमान, वर्षा मिट्टी आदि के अनुसार अलग-अलग होता है जिसका ज्ञान ग्रामीणों को नही होता। बीज विक्रेता भी किसानों को इसकी जानकारी नहीं देता ाशायद उसे भी मालूम न हो। सरकार भी किसानों के लिये उचित प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं करा पाती। ऐसे में किसान हारा हुआ जुआरी बन जाता है। उपज हुई तो ठिक वर्ना नुकसान तय है। उपज होने के बाद भी मेहनत का फल नहीं मिलता। किसान यहां भी नीरीह बन जाता है। उपज की बाजार में कीमत नहीं मिलती, बाजार पहुंच गये तो बिचौलिये और साहूकारों का नेक्सस इन्हें वाजिब कीमत लेने नहीं देता। औने पौने दामों पर उपज खरीद कर वह स्टोर कर लेता है। किसान यहां भी दाव हार जाता है। नतीजा किसानों में हताशा, निराशा कृषि से मोह भंग यहां तक की आत्महत्या भी। सरकार चाहे तो किसानों को इस जुए के जाल से निकाल सकती है। हर हाल में खून पसीने से पैदा किये गये फसल का न्यूनतम मूल्य दिलवाना सुनिश्चित कर दे। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करा कर मॉनसून पर निर्भरता घटाये। हाइब्रीड बीजों पर नियंत्रण और किसानों को इसके लिये सही प्रशिक्षण उपलब्ध कराये,कोल्डस्टोरेज की सुविधा छोटे किसानों को भी मिले। बिचौलियों का प्रभुत्व समाप्त करे। तभी अन्नदाता सुखी होगा।

> **दो साल पहले मांडर,लोहरदगा, के इलाकों में किसानों ने धान के महंगे हाइब्रीड बीज से खेती की, और लहलहाते पौधों में बाली लगी ही नहीं या बाली अंदर खोखले रह गये उनमें दाने नहीं हुये**

जल उपयोग के तरीके पर पुनर्विचार की दरकार

सुनीता नारायण

> एक बड़ी समस्या है कि नदी के पास समुचित जल नहीं होने से वह इंसानों के पैदा किए हुए अवशिष्ट को बहाकर ले भी नहीं जा पाती। यह अपनी सफाई खुद नहीं कर सकती है और रोज कई मौतें मरती है। यह सब कुछ जलवायु परिवर्तन के युग में घट रहा है। तथ्य यह है कि हमें जल प्रबंधन के बारे में अपनी समझ एवं जानकारी के बारे में नए सिरे से सोचने की जरूरत है।

दक्षिण अफ्रीका की कार्यकर्ता जैकी किंग को नदियों में पारिस्थितिकी प्रवाह की जरूरत पर बल देने के लिए वर्ष 2019 के विश्व जल पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। आज यह मुद्दा अहम है कि पानी की बढ़ती जरूरत एवं जलवायु परिवर्तन को लेकर बढ़ते जोखिम के दौर में अपनी नदियों के अधिकारों को कैसे बहाल किया जाए? हमें समझना होगा कि नदियों के प्रवाह का मुद्दा असल में सत्ता की राजनीति से जुड़ा है। नदियों के अधिकारों का सवाल उस समय बेहद जटिल एवं राजनीतिक हो जाता है जब पानी की कमी हो और अधिकारों को चुनौती दी जा रही हो। संबंधित खबरें अब भी 19वीं सदी में अटके जल-उपयोग कानून भारत जैसे देशों में पानी अनाज पैदा करने में लगे करोड़ों किसानों को दिया जाता है। लेकिन आज शहरों के साथ-साथ उद्योगों की संख्या भी बढ़ रही है। जद्दोजहद इस बात पर है कि इस प्राकृतिक संसाधन के पुराने एवं नए उपभोक्ताओं के बीच पानी का पुनर्वितरण कैसे हो? यह काम बेहद कठिन है। इस पुनर्वितरण से तनाव पैदा होता है और कुछ जगहों पर यह खूनी संघर्ष का भी रूप ले लेता है। बाकी दुनिया के साथ अपने मतभेदों को समझना भी जरूरी है। पहले ही विकसित हो चुकी दुनिया मसलन यूरोप में पानी का वितरण मुख्य रूप से शहरों एवं उद्योगों को ही होता है क्योंकि आजीविका की तलाश में लोग शहरों में ही बस चुके हैं। लेकिन भारत में अब भी करोड़ों लोग खेतों में काम करते हैं और उन्हें अपनी आजीविका के लिए पानी की जरूरत है। समस्या यह भी है कि शहर एवं उद्योग पानी तो लेते हैं लेकिन इसके बदले वे अपशिष्ट पदार्थ एवं प्रदूषण देते हैं। वे नदियों को नष्ट कर देते हैं और इस तरह पहले से ही कम उपलब्ध पानी और भी लुप्त हो रहा है। लिहाजा इस संघर्ष में नदियों के पास कोई अधिकार नहीं रह जाता, उनमें प्रवाह के लिए पानी ही नहीं है।

आज बारिश होती है तो आसमान से बूंदें नहीं गिरती है, सैलाब आता है। वर्ष 2019 के मॉनसून में ही हम भारी एवं बहुत भारी बारिश के 1,000 से अधिक मामले देख चुके हैं, कई जगहों पर एक ही दिन में औसत बारिश की तुलना में 1,000-3,000 फीसदी अधिक बारिश हुई है। नतीजतन, इन जगहों पर बाढ़ आ गई। इससे भी बुरी बात यह है कि बाढ़ के बाद सूखे के हालात बन गए क्योंकि अतिवृष्टि वाले स्थानों पर अतिरिक्त पानी सहेजने के लिए जरूरी ढांचा ही नहीं है। जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं है, तालाबों एवं पोखरों को बरबाद किया जा चुका है। इस तरह सूखे के समय बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। यह सामान्य न होकर बेहद असामान्य बात है। याद रखें कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दिखने तो अभी बस शुरू हुए हैं। आगे चलकर तापमान और बढ़ेगा। हमें अत्यधिक बारिश के दौर में बांधों की भूमिका पर भी सिरे से सोचने की भी जरूरत होगी। बांधों का निर्माण पानी इका करने और प्रवाह के नियमन के लिए किया गया था। लेकिन अब पानी को इस तरह रखना काफी जोखिम भरा होता जा रहा है क्योंकि बांधों के प्रबंधकों के पास अत्यधिक बारिश की स्थिति में इका पानी छोडने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाता है। अचानक पानी छोड़े जाने से बाढ़ एवं प्रलय जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। इससे व्यापक स्तर पर जनजीवन नष्ट होता है। इस मुद्दे पर हमें जैकी किंग की अवधारणा पर गौर करने की जरूरत है ताकि हम नदियों के अधिकारों पर निर्णय करने की वास्तविकता का सामना करें। यह एक मौका भी है क्योंकि अगर हम नदियों को पानी का अधिकार देते हैं तो फिर हम कम से भी ज्यादा कर पाना सीख जाएंगे। पहला, कृषि क्षेत्र को पानी के इस्तेमाल पर अधिक समझदारी दिखानी होगी। लेकिन इसका मतलब केवल ड्रिप सिंचाई अपनाना भर नहीं है। इसका यह मतलब भी है कि हम अपने भोज्य पदार्थों में इस तरह बदलाव करें कि कम पानी का इस्तेमाल करने वाले भोजन करें और हम धनी देशों में प्रयुक्त औद्योगिक खेती के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए मांसाहारी उत्पाद न तैयार करें। इसके लिए जरूरी होगा कि सरकार फसलों की खरीद के दौरान चावल के बजाय कम पानी में उपजने वाले बाजरे को प्राथमिकता मिले। दूसरा, शहरों को नदियों से पानी लेने और फिर दोबारा पानी भरने के बारे में सीखना होगा। यहीं पर मल-मूत्र प्रबंधन का बड़ा अवसर भी है जो किफायती होने के साथ टिकाऊ भी है।

शहरों को यह पता होना चाहिए कि उन्हें नाले में बहने वाली हरेक बूंद को रिसाइकल कर दोबारा इस्तेमाल करना है। शहरों को यह कहा जाना चाहिए कि वे अपने नाला गिरने वाली जगह से पीने के लिए पानी जुटाएं। ऐसा होने पर शहर अपने अवशिष्ट जल के शोधन के लिए बाध्य होंगे और वह पानी दोबारा जलचक्र में लौट आएगा। इससे जल सुरक्षा भी बढ़ेगी। तीसरा और सबसे अहम, हमें यह अहसास करना होगा कि अत्यधिक एवं असमान बारिश से निपटने का इकलौता रास्ता यही है कि हरेक बूंद को संरक्षित किया जाए और निकासी के लिए समुचित ढांचा बनाया जाए। हरेक जलस्रोत, हरेक नाले को गहरा एवं संरक्षित किया जाए ताकि बाढ़ के पानी को जमा किया जा सके। भारत में जलभंडार प्रणालियां बनाने की असाधारण एवं विविध परंपरा रही है। ये ढांचे हमारे नए मंदिर बनने चाहिए। हरेक नाला, गड्ढा और जलस्रोत को इस तरह संरक्षित किया जाए कि बाढ़ का पानी भूमिगत जल को रिचार्ज करने में इस्तेमाल किया जा सके जो सूखे की स्थिति में काम आएगा। ●

प्रसाद वितरण हो या भोज भंडारे का आयोजन इसके समापन के बाद उस इलाके को प्लास्टिक कचड़े से बर्बाद कर देते हैं हम

पर्यावरण के हक में हों हमारे पर्व त्यौहार

> भारत तीज-त्योहार और उत्सवों का देश है। जगह-जगह मंदिर निर्मित किए गए हैं। इनमें पूजन प्रसाद का वितरण प्लास्टिक की थैलियों, कटोरिया और ग्लासों में किया जाता है। भक्त और दर्शनार्थी इस प्रसाद को श्रद्धापूर्वक ले तो लेते हैं, लेकिन प्रसाद को खाने के बाद लापरवाही से सड़क पर फेंक देते हैं।

डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र

एक साहित्यिक विमर्श के दौरान इस बात पर चर्चा हुई कि सड़क के किनारे पन्नी खाती गाय को देख कर ख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने उसे अपने व्यंग्य में उकेरा है। वह स्थिति आज भी उतनी ही गंभीर बनी हुई है। पन्नियां घटी नहीं, बल्कि बढ़ती ही गईं और आए दिन शहरों में न जाने कितनी ही गायें पन्नियों को खाकर बीमार होती हैं या फिर मर जाती है। आज इसके खिलाफ की जाने वाली तमाम बातों के बावजूद हालत में कितना बदलाव आया है। मेरे दिवंगत पिता पशु चिकित्सक थे। मुझे याद है कि उन्होंने कितनी ही गायों का ऑपरेशन करके पेट से पन्नियों का ढेर निकाले जाने की चर्चा की थी। आश्चर्य है कि गाय को लेकर आम लोग कई बार हमलावर होने की हद तक संवेदनशील होते हैं, लेकिन पन्नी खाकर उनके मरने को लेकर उन्हें कोई फिक्र नहीं होती। अधिकतर लोग बाजार से खरीदारी करने के बाद सामान के लिए पन्नियों का ही उपयोग करते हैं। हर रोज शाम को हाथ हिलाते हुए बिचरने जाते हैं और लौटते वक्त दोनों हाथों की पांचों अंगुलियों में सब्जियों से भरी पन्नियों की थैलियां घर लाते हैं। हमारी परंपरा में चीजों के बारंबार उपयोग में विश्वास है। अक्सर 'यूज एंड थ्रो' यानी 'इस्तेमाल करो और फेंक दो' वाली चीजों का भी हम बार-बार उपयोग करने से नहीं चूकते हैं। प्लास्टिक की थैलियां, बोतलें और डिब्बे अधिकतर घरों में बार-बार धोकर उपयोग में लाए जाते हैं। देश में पॉलिथीन की थैलियों का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। थोड़ी-सी सुविधा के चलते लोग कपड़े से बने थैलों की अपेक्षा पॉलिथीन की थैलियों को ज्यादा उपयोगी समझ रहे हैं और धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं। पूरे विश्व में प्रति मिनट कितना प्लास्टिक कचरा इकट्ठा होता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह तकनीकी जानकारी भी देना उचित नहीं लगता कि कितने माइक्रोन की पॉलिथीन का उपयोग करना चाहिए। दरअसल, उपयोगकर्ता चाहे कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, इतनी निपुणता नहीं रखता कि वह नियत माइक्रोन की पॉलिथीन की बनी थैलियों को चुनाव कर सके। इसलिए प्लास्टिक को पूरी तरह 'न' कहा जाए, इस बात पर जोर दिया जाना ज्यादा जरूरी है। अब इसके व्यापक नुकसानों और पर्यावरण पर घातक असर को देखते हुए राजनीतिकों की ओर से भी इस पर पाबंदी की बातें की जाने लगी हैं, लेकिन सच यह है कि पर्यावरणविद लंबे समय से इस बारे में देश और समाज को चेतावनी देते रहे हैं। अगर वक्त रहते देश के राजनीतिक वर्ग और समाज ने इसके प्रति कोई ठोस संकल्प नहीं लिया, तो आने वाले वक्त में इसका भयावह खमियाजा उठाना पड़ सकता है।

कुछ समय पहले एक खबर आई थी कि कचरे के ढेर से अपनी भूख मिटाती गायें अचानक बीमार पड़ गईं। खाना-पीना बंद कर दिया था, उनके पेट बुरी तरह फूल गए थे और फिर कई गायों की तड़प-तड़प कर मौत हो गई थी। गायों का जब पोस्टमार्टम किया गया तो पता चला कि उनकी आहार नलिका पॉलिथीन की थैलियों से बुरी तरह अवरुद्ध हो गई थी। ऑपरेशन से जो थैलियों का कचरा आंत से निकाला गया, उनमें से अधिकतर थैलियों में घरों से फेंका गया अतिरिक्त खाना अब भी सुरक्षित था। ऐसा केवल इसलिए हुआ कि लोग घर लाई गई पॉलिथीन की थैलियों को फेंकने के पहले उनमें घर की अतिरिक्त खाद्य सामग्री, फलों या सब्जियों के छिलके आदि को भर कर रख देते हैं। फिर इसको पोटलीनुमा बना कर फेंक देते हैं। कचरे के ढेर से अपनी भूख मिटाते जानवर इन पोटलियों को साबुत निकल जाते हैं।

भारत तीज-त्योहार और उत्सवों का देश है। जगह-जगह मंदिर निर्मित किए गए हैं। इनमें पूजन प्रसाद का वितरण प्लास्टिक की थैलियों, कटोरिया और ग्लासों में किया जाता है। भक्त और दर्शनार्थी इस प्रसाद को श्रद्धापूर्वक ले तो लेते हैं, लेकिन प्रसाद को खाने के बाद लापरवाही से सड़क पर फेंक देते हैं। इनमें बचा हुआ प्रसाद जानवरों को आकर्षित करता है और वे उसे निगल लेते हैं। कमोबेश सभी पर्यटन स्थलों की स्थिति भी ठीक नहीं है। मैं पांच साल मुंबई में पदस्थ था। एक सपना लेकर गया था कि गेटवे ऑफ इंडिया से खूबसूरत नीले समुद्र को निहारूंगा। लेकिन वहां की हालत देख कर सारे सपने टूट गए। मुंबई के अधिकतर समुद्र तट पानी की खाली प्लास्टिक के बोतलों से अटे पड़े थे। ज्यादातर पर्यटक लापरवाही से खाली बोतलें समुद्र में उछाल देते हैं। मुझे किसी फिल्म का एक वीभत्स दृश्य याद आता है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सिर पर पॉलिथीन की थैली इस तरह पहना देता है कि उसकी सांस अवरुद्ध हो जाती है। उखड़ती सांसों के साथ फूलती-पिचकती पॉलिथीन देख कर जी दहल जाता है। तो क्या हम मनुष्यों का जीवन भी इसी तरह प्लास्टिक की पन्नियों के अंधाधुंध प्रयोग से अवरुद्ध हो जाएगा? क्या अब चेतने का समय नहीं आ गया है?●

ब्रह्मांड बनने की तरतीब

चंद्रभूषण

ब्रह्मांड की बनावट के कुछ सुराग अब वैज्ञानिकों की पकड़ में आने लगे हैं। उनकी मुश्किल का अंदाजा कैसे लगाया जाए? हमारी आकाशगंगा एक गैलेक्सी है जिसमें सूरज जैसे ढेरों तारे भरे हुए हैं। कितने? कम से कम 10 हजार करोड़, अधिक से अधिक 40 हजार करोड़। आकाशगंगा में ये तारे किस तरतीब से चलते-फिरते हैं, इसका एक मोटा खाका हमारे पास मौजूद है, हालांकि इसमें नए-नए ब्यौरे जुड़ते रहते हैं। और ब्रह्मांड में हमारी आकाशगंगा जैसी कुल कितनी गैलेक्सियां हैं? हबल टेलिस्कोप ने अनुमान 10 हजार करोड़ लगाया है लेकिन वैज्ञानिकों का आकलन है कि ज्यादा बेहतर टेलिस्कोप से यह 20 हजार करोड़ के आसपास निकलेगी।

खगोलविज्ञानियों की मुश्किल ब्रह्मांड में इन गैलेक्सियों के वितरण की तरतीब खोजने से जुड़ी है। ये एक-दूसरे से दूर भाग रही हैं। जो धरती से जितनी दूर है वह उतनी ही ज्यादा तेजी से दूर भाग रही है, यह जानकारी वैज्ञानिकों को काफी पहले से है लेकिन गैलेक्सियों के बड़े-बड़े झुंड भी हैं- एक-एक में लाखों गैलेक्सियां! और क्लस्टर या सुपरक्लस्टर नाम के ये झुंड आपस में किसी व्यवस्थित ढांचे के तहत बंधे हैं, यह जानकारी 1987 से शुरू होकर अब तक नए-नए आश्चर्यों के साथ सामने आ रही है। यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेटरी में लिए गए एक हालिया प्रेक्षण में 12 अरब प्रकाशवर्ष दूर स्थित एक क्लस्टर एसएसए-22 के प्रेक्षण से इन क्लस्टरों के हाइड्रोजन गैस के विराट रेशों (फिलामेंट्स) का अंग होने की बात सामने आई है। करोड़ों प्रकाशवर्ष लंबे ये हाइड्रोजन फिलामेंट्स जहां-जहां एक-दूसरे को काटते हैं, वहीं गैलेक्सियों के झुंड नजर आते हैं। '

पशुओं में तीन गुणा बढ़ा एंटीबायोटिक रेसिस्टेन्स का खतरा

अंतराष्ट्रीय जर्नल साइंस में छपी रिपोर्ट के अनुसार मध्यम और कम आय वाले देशों में पशुओं से प्राप्त होने वाले प्रोटीन की मांग दिनों दिन बढ़ती जा रही है, जिसके चलते पशुधन के लिए एंटीबायोटिक की खपत में भी वृद्धि हो रही है। आंकड़े दर्शाते हैं कि 2000 से लेकर 2018 के बीच मवेशियों में पाए जाने वाले जीवाणु तीन गुना अधिक एंटीबायोटिक रेसिस्टेन्स हो गए हैं, जोकि एक बड़ा खतरा है, क्योंकि यह जीवाणु बड़े आसानी से मनुष्यों के शरीर में भी प्रवेश कर सकते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार भारत और चीन के मवेशियों में एंटीबायोटिक रेसिस्टेन्स सबसे अधिक पाया गया है, जबकि ब्राजील और केन्या में भी इसके मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।

चिंतन बाढ अब प्राकृतिक नहीं मानवजनित हो गये हैं

> आधुनिक शहरों का कुप्रबंधन भी बाढ़ का मुख्य कारण है, वरना तीन घंटे की बारिश में मुंबई, पटना में बाढ़ कैसे आ सकती है?

ब्यूरो प्रमुख

जंगलों का संरक्षण आज के समय में अनिवार्य जरूरत है। ये जंगल ही हैं जो बाढ़ के प्रभाव को कम करते हैं।चौपालः आपदा को न्योता व संतुलन जरूरीबहुचर्चित नदी जोड़ परियोजना से बाढ़ की बारंबारता और सूखने वाली नदियों को आपस में जोड़ कर अतिरिक्त जल का प्रबंधन किया जा सकता है।बाढ़ को हमेशा से प्राकृतिक आपदा के रूप में गिना जाता रहा है लेकिन हमें सोचना चाहिए कि जंगलों का विनाश तो प्राकृतिक नहीं है, कंक्रीट के जंगल प्राकृतिक नहीं हैं, नदियों पर बांध प्राकृतिक नहीं हैं और न ही वैश्विक तापमान का बढ़ना प्राकृतिक है। विकास की अंधी दौड़ में जंगलों का नाश हुआ, आधुनिक नगर बसे, उद्योगों का विकास हुआ, वैश्विक तापमान बढ़ा और जलवायु में परिवर्तन हुआ। और इन्हीं सब कारणों से बाढ़ जैसी आपदाओं की बारंबारता बढ़ी। बाढ़ पहले भी आती थीं लेकिन अब इनकी आवृत्ति से लगता है कि मानव ही इन्हें बुलाता है। बाढ़ का मुख्य कारण प्राकृतिक कम और मानव जनित ज्यादा प्रतीत होता है।वैश्विक जलवायु में परिवर्तन और तापमान में वृद्धि के कारण ही वर्षा के समय में भी परिवर्तन हुआ है। पहले तीन ही मुख्य मौसम होते थे पर अब कई मौसम हैं। जैसे प्रचंड गर्मी है, वैसे ही ठंड है। बेमौसम बारिश का नतीजा भी बाढ़ के रूप में सामने आता है। जल प्रबंधन तथा आपदा प्रबंधन के साथ-साथ कुछ महत्त्वपूर्ण उपायों के जरिए बाढ़ से बचा जा सकता है। बहुचर्चित नदी जोड़ परियोजना से बाढ़ की बारंबारता और सूखने वाली नदियों को आपस में जोड़ कर अतिरिक्त जल का प्रबंधन किया जा सकता है। छोटे व बड़े स्तर पर 'वाटर हार्वेस्टिंग' तकनीक के व्यापक और अनिवार्य क्रियान्वयन से अतिरिक्त जल को सीधे भूमि में स्थानांतरित किया जा सकता है, जिससे बाढ़ से राहत तो मिलेगी ही, भूमिगत जल का स्तर भी बढ़ेगा। बाढ़ को सहने योग्य अधोसंरचना का अधिकतम निर्माण होना चाहिए जिससे बाढ़ के समय जानमाल का नुकसान कम होगा।जंगलों का संरक्षण आज के समय में अनिवार्य जरूरत है। ये जंगल ही हैं जो बाढ़ के प्रभाव को कम करते हैं। आधुनिक और नवीनतम तकनीकों का प्रयोग, जैसे इसरो व भारतीय मौसम केंद्र की सहायता से बाढ़ का समय-पूर्व आकलन, बैंकिंग आदि वित्तीय संस्थाओं के प्रयोग से राहत कार्य का पैसा जरूरतमंद को तुरंत पहुंचाना आदि।

हाल की कुछ घटनाओं से हम समझ सकते हैं कि बाढ़ एक मानव जनित आपदा के तौर पर विकराल रूप लेती जा रही है और बचाव का एकमात्र साधन यह है कि हमें विकास की दौड़ में प्रकृति को साथ लेकर चलना ही होगा। प्रत्येक व्यक्ति की ओर से थोड़ी-सी समझदारी, जागरूकता और पहल से व्यापक बदलाव लाया जा सकता है।●

बीज खरीद जांच पर गठित समिति पर सवाल?

रांची : 49 करोड़ रूपयें के कृषि बीज खरीद में हुयी घोटाले की जांच को लेकर दायर पीआइएल पर शुक्रवार को सुनवाई करते हुये एक्टिंग चीफ जस्टिस हरीश चंद्र मिश्र और जस्टिस अपरेश कुमार सिंह की खंडपीठ ने मामले की सुनवाई करते हुये कृषि निदेशक की अध्यक्षता वाली जांच समिति पर सवाल उठाये। खंडपीठ ने मौखिक रूप से कहा कि यह उच्चस्तरीय मामला है। निदेशक की अध्यक्षता वाली समिति के स्थान पर उच्च स्तरीय समिति गठित होनी चाहिये थी। सुनवाई के दौरान खंडपीठ ने सरकार के आग्रह को स्वीकार करते हुये जवाब दायर करने के लिये समय प्रदान किया। मामले की अगली सुनवाई 22 नवंबर को होगी।

गेहूं फसल को नुकसान पहंचाने वाले कीट का शिकार करती है यह मक्खी

सेंटर फॉर एग्रीकल्चर एंड बायोसाइंस इंटरनेशनल (सीएबीआई) के वैज्ञानिकों ने ऐसे कीटों की पहचान की है, जो गेहूं की फसलों पर लगने वाले कीट एफिड्स का शिकार करते हैं। इन कीटों को सिरिफिड मक्खी कहा जाता है, जो एफिड्स को मार कर खा जाती हैं। एफिड्स की वजह से पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश में गेहूं की फसल को भारी नुकसान पहुंचता है। दावा किया गया है कि नए अध्ययन से कीट प्रबंधन में आसानी होगी और इस नुकसान से बचा जा सकता है। हालांकि इसमें समय और मौसम पर भी निर्भर करता है।

एफिड्स का वैज्ञानिक नाम दिउराफिस नोक्सिआ है। एफिड्स के गंभीर संक्रमण के कारण पत्तियों और टहनी और पौधे का विकास रुक सकता है। एफ़िड्स एक पौधे से दूसरे पौधों तक लगातार वायरस फैला सकते हैं। डॉ. मुहम्मद फहीम के नेतृत्व में पंजाब (पाकिस्तान) के पांच जिलों के दस खेतों में दो साल तक अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य अलग-अलग समय, मौसम, जगह और एफिड्स की उपस्थिति और उन्हें खाने वाले कीड़ों के बीच संबंधों की खोज करना था, विशेष रूप से सिरिफिड मक्खियां जो एफिड्स को खा जाती है। इसलिए जानबूझकर अलग-अलग खेती के परिदृश्यों का चयन किया गया, जिसमें चावल और कपास की फसल को भी शामिल किया गया।

इस तरीक़े से धरती को गर्म होने से रोका जा सकेगा?

टिम स्मेडले

इंसान ने अपनी ख़्वाहिशों और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए क़ुदरत को ख़ात्मे के कगार पर ला खड़ा किया है. माहौल इतना ख़राब हो चुका है कि अब तो इस बात का अंदेशा जताया जा रहा है कि आने वाले दिनों में यह धरती शायद इंसान के रहने लायक ही न रहे. निराशा के इस माहौल में भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो उम्मीद बचाए हुए हैं. शायद क़ुदरत भी ख़ुद इंसान की इस कोशिश को समझ रही है और ख़ुद को बचाने के तरीक़ों का इशारा कर रही है. मशहूर ज्वालामुखी माउंट पिनाटूबो के नीचे इतना ज़्यादा दबाव बढ़ गया था कि यहां ख़ामोश बैठा ज्वालामुखी अचानक फट पड़ा. इससे करोड़ों टन राख निकल कर आसमान में क़रीब दस किलोमीटर तक उछल कर मोटी परत बन गई. राख के ग़ुबार की वजह से सूरज की किरणें ज़मीन तक नहीं पहुंचीं. दुनिया का तापमान क़रीब 0.6 डिग्री सेल्सियस कम हो गया. माउंट पिनाटूबो में हुआ विस्फ़ोट बीसवीं सदी का दूसरा सबसे बड़ा विस्फ़ोट कहा जाता है. इसी से शोधकर्ताओं को एक तरीक़ा समझ आया कि क्यों ना बनावटी बादल बनाकर ज़मीन तक आने वाली सूरज की नुक़सानदेह किरणों को रोका जाए. इससे धरती का तापमान बढ़ने से रोका जा सकेगा. हालांकि जलवायु परिवर्तन रोकने के बहुत से उपाय किए जा रहे हैं लेकिन वो सभी नाकाफ़ी हैं.

इंटरनेशनल पैनल फ़ॉर क्लाइमेट चेंज की रिपोर्ट के मुताबिक़ 2050 तक दुनिया को ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को ज़ीरो तक लाना होगा. लेकिन हालिया रिपोर्ट बताती है कि कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन कम होने के बजाय बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है दुनिया के सभी देशों को जल्द से जल्द हानिकारक गैसों का उत्सर्जन रोकने के लिए क़दम उठाना होगा.अभी तक धरती के ध्रुवों पर मौजूद बर्फ़ की वजह से सूरज की क़रीब 30 फ़ीसद किरणें मुड़ जाती हैं.

इसी तरह समुद्री बर्फ़ सूरज की हानिकारक किरणों को लगभग 90 फ़ीसद तक लौटा देती है. वहीं खुले पानी वाले समुद्र सूरज की 94 फ़ीसद किरणों को सोख लेते हैं. आर्कटिक

समुद्र की बर्फ़ तेज़ी से पिघने की वजह से ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रही है.

वैज्ञानिक मानते हैं कि अगर हम वैज्ञानिक तरीक़े से ऐसी सतह बना लें, जो सूरज की किरणों को वापस आसमान की तरफ़ मोड़ सके, तो इससे धरती के गर्म होने की रफ़्तार धीमी हो सकती है. इसीलिए आर्टिफ़िशियल रिफ़्लेक्टिव सर्फ़ेस बनाने पर विचार किया जा रहा है.कुछ प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो भी चुका है. इनमें मरीन क्लाउड ब्राइटनिंग और सोलर जियो इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट पर अमरीकी नेशनल एकेडमीज़ ऑफ़ साइंसेस और कई अन्य कमेटियों की रज़ामंदी है.

स्कॉटलैंड की एडिनबरा यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर स्टीफ़न सॉल्टर इस मुहिम में अहम रोल निभा रहे हैं. प्रोफ़ेसर स्टीफ़न 1970 के दशक में जहाज़ों की वजह से समुद्र में होने वाले प्रदूषण पर रिसर्च कर रहे थे. तब उन्होंने पाया कि जिस तरह पानी में जहाज़ अपने पीछे प्रदूषण फैलाते चलते हैं, ठीक उसी तरह आसमान में हवाई जहाज़ भी समुद्र के ऊपर ट्रेल बनाते हैं. इन्हीं ट्रेल्स की वजह से बादल चमकते हैं और बादलों की चमक से सूरज की किरणें रुक जाती हैं.

1990 में ब्रिटेन के वैज्ञानिक जॉन लेथेम ने भी सफ़ेद सर्फ़ेस बनाने की थ्योरी पेश की थी. इसके लिए उन्होंने समुद्री नमक स्प्रे करने की तरकीब सोची थी. हालांकि शुरुआत में जिस तरह की स्प्रे मशीन तैयार की गईं, उनसे स्प्रे करना बहुत मुश्किल होता था. लेकिन नए डिज़ाइन की मशीनों से ये परेशानी दूर हो जाएगी. ये मानवरहित हाइड्रो फ़ॉइल शिप होगी जिसे कंप्यूटर और विंड पावर की मदद से नियंत्रित किया जाएगा. ये मशीन बादलों की तरफ़ समुद्री नमक के बारीक कणों की मोटी परत तैयार करेगी. प्रोफ़ेसर सॉल्टर कहते हैं कि इस प्रोजेक्ट का ख़र्चा संयुक्त राष्ट्र की सालाना क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस के ख़र्च से भी कम होगा. इसके लिए हर साल 10 से 20 करोड़ डॉलर सालाना ख़र्च करने होंगे.

सॉल्टर के मुताबिक़ 300 जहाज़ों का बेड़ा दुनिया का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस कम कर देगा. 2012 में ब्रिटेन की लीड्स यूनिवर्सिटी में हुई एक रिसर्च में कहा गया है कि चमकीले बादलों की मदद से ट्रॉपिकल साइक्लोन सीज़न में समुद्री सतह का तापमान कम करके समुद्री तूफ़ानों और समुद्री धारा गर्म होने के असर यानी अल नीनो को भी रोका जा सकता है. क्योंकि ये तूफ़ान समुद्र में तापमान बढ़ने की वजह से आते हैं.क़ुदरत को बचाने के लिए ये प्रोजेक्ट बेहतर विकल्प तो माने जा रहे हैं लेकिन जानकार इनसे होने वाले नुक़सान से भी आगाह कर रहे हैं. बहुत सी थ्योरी इशारा करती हैं कि इनसे सूखा पड़ने, सैलाब, और फ़सलों के सूखने का ख़तरा बढ़ सकता है.

कुछ रिसर्चर तो इस तकनीक का इस्तेमाल हथियार के तौर पर किए जाने का ख़तरा भी बताते हैं. वहीं कुछ का कहना है कि जियो इंजीनियरिंग तकनीक की वजह से कार्बन डाई ऑक्साइड का स्तर बढ़ता ही रहेगा. इससे गंभीर समस्याएं पैदा हो जाएंगी. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोलर रेडिएशन मैनेजमेंट का एक और विकल्प सुझाया जा रहा है. स्ट्रेटोस्फ़ेरिक एरोसोल स्कैटरिंग यानी (SAS). इस तकनीक के तहत वायुमंडल में एरोसोल निचले स्तर पर स्प्रे करने के बजाए 10 किलोमीटर ऊंचाई पर कृत्रिम बादल बनाने की योजना है. इतनी ऊंचाई पर एरोसोल की ये परत लंबे समय के लिए स्थाई होगी और मुनासिब अनुपात में सूरज की रौशनी को अंतरिक्ष में लौटा देगी.

2017 में पेश अमरीकी नेशनल सेंटर फ़ॉर एटमोस्फ़ेरिक रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक़ वायुमंडल में हरेक टेराग्राम पार्टिकल्स से विश्व का तापमान 0.2उ कम किया जा सकता है. हालांकि अभी तक ये किसी को नहीं पता कि इस तकनीक का मौसम और माहौल पर कैसा असर पड़ेगा. SAS पर हार्वर्ड का सोलर इंजीनियरिंग रिसर्च प्रोग्राम काम कर रहा है. एक प्रोजेक्ट के तहत हवा में कैल्शियम कार्बोनेट को वेदर बलून के ज़रिए वायुमंडल में भेजकर केमिकल रिएक्शन जानने की कोशिश की गई. लेकिन इसका विरोध किया जाने लगा. विरोध करने वालों में वो लोग भी शामिल थे जो ख़ुद को फ़्रेंड्स ऑफ़ अर्थ कहते हैं.

SAS प्रोजेक्ट के डायरेक्टर एलिज़ाबेथ बर्न भी इस तकनीक के ख़िलाफ़ हैं. इनका कहना है कि अगर ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन इसी तरह बढ़ता रहा तो हर साल ज़्यादा से ज़्यादा सोलर जियोइंजीनियरिंग प्रोजेक्ट लगाने होंगे. जिससे धरती पर दबाव और ज़्यादा बढ़ेगा. बर्न इस इल्ज़ाम का भी विरोध करते हैं कि जियो इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट के पीछे पैसे वाली कंपनियों का हाथ है.ज़्यादातर रिसर्चरों का कहना है कि पर्यावरण को बचाने के और भी बहुत से तरीक़े हैं. ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाकर और तेल-गैस का प्रयोग कम कर के भी पर्यावरण को बचाया जा सकता है. लेकिन जियो इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट के पक्षकार रिसर्चरों का कहना है कि विरोध का कोई वैज्ञानिक सबूत होना चाहिए.

मुख्यमंत्री ने राजनगर में नर्सिंग कौशल कॉलेज का उद्घाटन किया

- मुख्यमंत्री ने कहा बच्चियों को हुनरमंद बनाना है उद्देश्य।
- मुख्यमंत्री ने सरायकेला-खरसावां में 1 अरब 24 करोड़ 65 लाख 81 हजार 213 रुपये की 45 योजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया।
- नर्स अपने व्यवहार से मरीजों का हौसला बढ़ायें, आपका व्यवहार मृदु होना चाहिए।
- आदिवासी, दलित, पिछड़े वर्ग की बच्चियों को हुनरमंद बना रोजगार देना लक्ष्य।
- रांची और साहेबगंज में जल्द खुलेगा नर्सिंग कॉलेज।

राजनगर/सरायकेला-खरसावां: ादिवासी, दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक समुदाय की बच्चियों के सशक्तिकरण, उनका आर्थिक स्वावलंबन एवं हुनरमंद बनाकर रोजगार से आच्छादित करना सरकार का लक्ष्य है। आपको हुनरमंद बनाने का कार्य योजना के तहत हो रहा है। राज्य में 3 मेडिकल कॉलेज शुरू हो चुके हैं। दो मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन हैं। विभिन्न जिलों के सदर अस्पताल का विस्तारीकरण किया जा रहा। ऐसे में हमें कुशल मानव संसाधन की जरूरत होगी। यहीं आपको रोजगार प्राप्त होगा। क्योंकि नर्स की मांग सभी मेडिकल कॉलेज/हॉस्पिटल और सदर अस्पताल में होगी। निजी क्षेत्र में भी अस्पताल खुल रहें हैं। जहां आपकी जरूरत होगी। आप यहां पूरी तन्मयता से प्रशिक्षण प्राप्त करें और समाज की सेवा में अपनी भागीदारी निभाएं। रांची और साहेबगंज में जल्द नर्सिंग कॉलेज का उद्घाटन होगा। सरकार ने पूरी तत्परता से कार्य करते हुए आपका नियोजन सुनिश्चित करने हेतु मेडिकल कॉलेज व हॉस्पिटल का निर्माण किया। हमारे कार्य करने की गति का आकलन आप कर सकते हैं। 67 साल में मात्र 3 मेडिकल कॉलेज और 5 वर्ष में 5 मेडिकल कॉलेज का निर्माण, जिनमें में से दो निर्माणाधीन हैं। ये बातें मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने सरायकेला-खरसावां स्थित राजनगर में नर्सिंग कौशल कॉलेज के उद्घाटन समारोह में कही।

67 साल में 3 मेडिकल कॉलेज और 5 साल में 5 मेडिकल कॉलेज यह है हमारे कार्य करने की गति: मुख्यमंत्री

12 ट्रेड में युवाओं को मिल रहा है प्रशिक्षण

मुख्यमंत्री ने कहा की कल्याण गुरुकुल से प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को नियुक्ति पत्र मिला है। आप अन्य राज्य में जाकर कार्य करेंगे। थोड़ा संघर्ष होगा। यह जरूरी भी है। क्योंकि संघर्ष आपके मजबूत करेगा। राज्य में 25 कल्याण गुरुकुल विभिन्न जिलों में 12 ट्रेड में युवाओं को हुनरमंद बना रहें हैं। ये प्रशिक्षण समय की मांग के अनुरूप मिल रहा है। 100 प्रतिशत नियोजन सरकार सुनिश्चित कर रही है।

आईपीआरडी की पहुंच गांव-गांव, तक सुनिश्चित करें- सुनील कुमार वर्णवाल

मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव सह सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सचिव डॉ सुनील कुमार वर्णवाल ने आईपीआरडी के कार्य प्रगति की समीक्षा की

संवाददाता

रांची: सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सचिव डॉ सुनील कुमार वर्णवाल ने कहा कि सूचना एवं जनसंपर्क विभाग (आईपीआरडी) की पहुंच गांव-गांव घर-घर तक सुनिश्चित करें। विभाग का दायित्व एक कड़ी का काम करते हुए विकास की राह में खड़े अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं और नीतियों की जानकारी पहुंचाना है। जनसंपर्क कार्य से जुड़े सभी अधिकारी अपनी कार्यशैली में बदलाव लाते हुए गुणवत्तापूर्ण न्यूज़ विज्ञप्ति, सक्सेस स्टोरी, न्यूज़ ऑफ द वीक इत्यादि के माध्यम से सरकार की योजनाओं, नीतियों, उपलब्धियों का त्वरित गति से प्रचार-प्रसार करें।

जनता और सरकार के विश्वास पर खरा उतरें

अधिकारियों को जनता और सरकार के बीच सेतु की तरह काम करना चाहिये ताकि दोनों के विश्वास पर खरा उतरें। सरकार की योजनाओं और नीतियों को विभिन्न मीडिया के विभिन्न माध्यम से और सीधे जनता के समक्ष रखें। सरकार की योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार के महत्वपूर्ण उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए कहा कि विभाग के वरीय अधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, जनसंपर्क कार्य से जुड़े सभी अधिकारी अपनी ताकत को पहचानते हुए सरकार की योजनाओं की जानकारी को प्रभावी रूप से लोगों तक पहुंचाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले हाट-बाजार, गांव में स्थित चौक-चौराहा इत्यादि जगहों पर हार्डिंग, पोस्टर, बैनर, नुक्कड़-नाटक, लोक गीत-संगीत-नृत्य इत्यादि आयोजित कर सरकार की सोच और उद्देश्य को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का काम करें। राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रचार एलईडी वैन का बेहतर इस्तेमाल कर योजनाओं की जानकारी गांव-गांव घर-घर तक पहुंचाना सुनिश्चित करें, ताकि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले आम जनता को सरकार की योजनाओं की पूरी जानकारी हो और वे योजनाओं का लाभ उठा सकें।

...पेज 1 का शेष **झारखंड में मीठी क्रांति**

उद्यम, बेहतर आजीविका का विकास तथा स्वरोजगार के सृजन के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी।

कुलपति ने कहा कि झारखण्ड राज्य में मधुमक्खीपालन, मुर्गीपालन और बकरीपालन को प्रोत्साहित कर किसानों की आय बढाने के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आइसीएआर) द्वारा विश्वविद्यालय को जनजातीय उपयोजना के तहत 7।53 करोड़ रूपये लागत की क्षमता परियोजना की स्वीकृत दी गई है. इस क्षमता परियोजना को राज्य के पाकुड़, साहिबगंज, दुमका, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, रांची, लोहरदगा, लातेहार, सिमडेगा और गढ़वा जिले में कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीकी) के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है.इसके अधीन मधुमक्खीपालन के लिए सभी दस जिलों में से प्रत्येक जिले से 60 - 60 किसान यानी कुल 600 किसान चयन किया गया है. जबकि मुर्गीपालन और बकरीपालन के लिए प्रत्येक जनजातीय बहुल जिले के चार - चार गांवों से 25 पशुपालक, यानी कुल 1000 किसान चुने गये है. मधुमक्खीपालकों द्वारा उत्पादित मधु के एक्सट्रैक्शन और प्रोसेसिंग के लिए प्रत्येक केवीके में एक एक्सट्रैक्शन संयंत्र भी स्थापित किये जा रहे है.उन्होंने कहा विश्वविद्यालय द्वारा राज्य में मीठी क्रांति हेतु जिलों में केवीके के माध्यम से प्रयास शुरू कर दिए गए है. इन जनजातीय बहुल जिलों में इस पायलट परियोजना प्रारंभ किया गया है. पहले चरण में इन जिलों के 600 जनजातीय किसानों को जिले स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों में जागरूक एवं प्रशिक्षण प्रदान कर मधुमक्खी पालन में प्रयुक्त

मधुमक्खी पालन सफल कहानी

मधुमक्खी पालन उद्यम ने बदली तक़दीर

रांची शहर से सटे एदलहातु गाँव के 42 वर्षीय ग्रेजुएट अशोक कुमार करीब 24 वर्षों से मधुमक्खी पालन से जुड़े है. इस व्यवसाय से उन्हें करीब 20 लाख सालाना आमदनी होती है. उन्होंने गाँव में मधुमक्खी पालन एवं उत्पादन केंद्र स्थापित कर रखा है. इस केंद्र में 1000 बक्से हैं, जिनमें देशी मक्खी (एपिस सेरेना) व ट्राईगुना मधुमक्खी (बिना डंक वाली) तथा इटालियन मधुमक्खी के पालन से शहद के साथ पराग, मोम और रॉयल जेली का उत्पादन कर लघु उद्यम चलाते है. अशोक ने 1995 में मैट्रिक पास करने के बाद गाँव में 3 एकड़ जमीन लीज पर लेकर अदरख, टमाटर और सब्जी की खेती करना शुरू किया। इसी दौरान उनका संपर्क बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के कीट वैज्ञानिक डॉ देवेन्द्र प्रसाद से हुआ। डॉ प्रसाद के मार्गदर्शन में अशोक ने 15 हजार की लागत से 5 बक्से से मधुमक्खी पालन का उद्यम शुरू किया था और आज उनके केंद्र में 1000 बक्से हैं। वे राज्य में विलुप्त हो रही देशी मधुमक्खी के संरक्षण का भी कार्य कर रहे है. अशोक का कहना है कि सप्ताह में दो घंटे की मेहनत से सफल मधुमक्खी पालन कर लेते है. बिना डंक वाली देशी मक्खी की देख-भाल पत्नी करती हैं। उनके केंद्र में 11 लोग कार्यरत है. केंद्र में मांग के अनुरूप मधुमक्खी बक्सा और मधु निष्कासन यंत्र का भी निर्माण कर उचित दर पर बेचा जाता है.अशोक कहते है कि एक बॉक्स से प्रतिवर्ष औसतन 50-80 किलो शहद मिलता है. केंद्र में 1000 बक्से से औसतन 90 क्विंटल शहद, 50 किलो पराग, 6 क्विंटल मोम प्रति वर्ष प्राप्त हो जाता है. बाजार की मांग के अनुसार करीब 8 - 10 किलो रॉयल जेली का उत्पादन भी होता है, इस शक्तिवर्धक जेली का बाजार मूल्य रू। 36 हजार प्रति किलो है. केंद्र में उत्पादित शहद एवं अन्य उत्पादों जैसे पराग, मोम और रॉयल जेली को थोक व्यापारी हाथो - हाथ खरीद लेते हैं। अशोक कहते है कि 40 हजार रूपये की लागत से 10 मधु मक्खी के बक्से, मधु निष्कासन यंत्र, नकाब, हथौडी व चाकू आदि की मदद से इस उद्यम को शुरू किया जा सकता है.मक्खी के बक्से को धनिया, लीची, सरसों, करंज, सरगुजा, सहजन, तिल, तीसी आदि फसलों के पास रखने से ज्यादा लाभ होता है. बढ़िया मौसम और फुल में रस सही रहने पर करीब डेढ़ गुना अधिक मधु का उत्पादन मिलता है. बाजार में देशी मधु की ज्यादा मांग को देखते हुए देशी मक्खी से मधु का उत्पादन काफी लाभकारी होता है।

उपादान दिये गए है. विश्वविद्यालय ने इन जिलों में 40 टन प्रति वर्ष उत्पादन का टारगेट रखा है. इस अभियान को बेहतर तरीके से लागु करने हेतु सभी दस जिलों के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कराया गया। वैज्ञानिकों ने रांची के एदलहातु स्थित मधुमक्खी पालन नर्सरी एवं उत्पादन केंद्र में देशी एवं विदेशी मधुमक्खी के पालन तथा मधु निष्कासन, मोम, पराग एवं रॉयल जैली के उत्पादन एवं विपणन की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की है।

इस उद्यम के विस्तार में ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित एवं जागरूक करने की आवश्यकता को देखते हुए विश्वविद्यालय के वानिकी संकाय ने रांची जिले के 100 महिलाओं को मधुमक्खी पालन से जोड़ा है. इन महिलाओं के बीच जागरूकता अभियान तथा उन्हें प्रशिक्षित कर प्रोत्साहित किया जा रहा है.

सीसीएल में सतर्कता जागरूकता का शुभारंभ

10 से 26 अक्टूबर तक 'स्टैन्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर'' पर चर्चा

संवाददाता

रांची:सीसीएल के सतर्कता विभाग द्वारा ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019'' का आयोजन सीसीएल मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रों और ईकाईयों में आगामी 28 अक्टूबर से 02 नवम्बर तक किया जायेगा। सीसीएल के सीएमडी गोपाल सिंह के मार्गदर्शन एवं मुख्य सतर्कता पदाधिकारी ए.के. श्रीवास्तलव के नेतृत्वस में सतर्कता विभाग द्वारा इस दिशा में पहल करते हुए ''ईमानदारी एक जीवन शैली'' के संदेश के साथ 10 अक्टूबर से "सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019" के अंतर्गत पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से ''स्टैडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर'' पर सीसीएल कर्मियों को जागरूक, प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा रहा है। सीवीओ सीसीएल ए.के. श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में कंपनी के सभी विभागों द्वारा अपने-अपने कार्यक्षेत्र के ''स्टैन्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर'' (एसओपी) बनाया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य है कंपनी के विभिन्न विभागों की कार्यशैली में एकरूपता लाना ।

औद्योगिक विकास और शहरीकरण के नकारात्मक प्रभाव से निपटना होगा

एजेंसियां

उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) ने कानपुर में चमड़ा कारखानों को बंद करने का आदेश दिया है। अगस्त में यूपीपीसीबी ने 126 चमड़ा कारखानों को 50 फीसदी क्षमता के साथ काम करने की मंजूरी दी थी बशर्ते कि वे प्रदूषण मानकों का पालन करें। परंतु राष्ट्रीय हरित पंचाट की गंगा निगरानी शाखा ने कहा है कि कानपुर के जाजमऊ औद्योगिक क्षेत्र में स्थित चमड़ा कारखानों से निकले प्रदूषक तत्त्व गंगा में मिल रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप इन कारखानों को इस माह के अंत तक बंद रखने का आदेश दिया गया है। कानपुर का चमड़ा उद्योग करीब 12,000 करोड़ रुपये का है। इसमें से करीब 50 फीसदी मूल्य का माल निर्यात किया जाता है। यह उद्योग करीब 10 लाख लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराता है। दिलचस्प बात यह है कि प्रदूषित जल के उपचार संयंत्रों का संचालन सरकारी संस्था जल निगम करता है, न कि चमड़ा कारखाने। जल निगम ने अपनी प्रतिबद्धता नहीं निभाई और उसने सुधार के लिए और अधिक वक्त मांगा है लेकिन इसका खमियाजा कारखानों को भुगतना पड़ रहा है।

व्यापक स्तर पर देखें तो यह घटना देश के समक्ष मौजूद तमाम आर्थिक और संचालन संबंधी चुनौतियों को उजागर करती है। ये चुनौतियां बढ़ते शहरीकरण और तेज विकास के प्रयास से उपजी हैं। बहरहाल, बाह्य कारकों का मुद्दा नया नहीं है और कानपुर के चमड़ा कारखानों के मामले में गंगा के प्रदूषण के व्यापक निहितार्थ हैं। अर्थशास्त्री ऐसी समस्याओं पर पिछले एक दशक से विमर्श कर रहे हैं। सबसे पहले ऐसा मुद्दा अल्फ्रेड मार्शल ने उठाया था और आर्थर पिगू ने उसे आगे बढ़ाया। पिगू ने अपनी पुस्तक द इकनॉमिक्स ऑफ वेलफेयर में (जो सन 1920 में प्रकाशित हुई थी) कहा, 'स्वहित राष्ट्रीय लाभांश में इजाफा करने वाला नहीं है, इसके परिणामस्वरूप सामान्य आर्थिक प्रक्रिया के साथ हस्तक्षेप के कुछ खास कदमों की अपेक्षा होनी चाहिए जो लाभांश को नुकसान नहीं पहुंचाएं बल्कि उसमें इजाफा करें।' पिगू ने हस्तक्षेप के तमाम तरीकों पर चर्चा की जिन्हें पिगूवियन कर के नाम से जाना जाता है। उदाहरण के लिए कार्बन कर ऐसे हस्तक्षेप का अच्छा उदाहरण है। बहरहाल, बाद के वर्षों में पिगूवियन कर की आलोचना होने लगी। मिसाल के तौर पर कहा गया कि यह सामाजिक लागत का आकलन करने में सक्षम नहीं है। देश को औद्योगिक विकास और तेजी से हो रहे शहरीकरण के नकारात्मक प्रभाव से निपटना होगा।

प्रदूषण से निपटने तथा पर्यावरण को हो रही हानि से निपटने के क्रम में हमेशा कर लगाना कारगर नहीं होता। उत्तर प्रदेश सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद सीवेज के पानी का बड़ा हिस्सा अभी भी गंगा में मिल रहा है। कानपुर के चमड़ा कारखानों के साथ यह मुद्दा भी दर्शाता है कि भारत को ऐसे मसलों से निपटने के लिए क्षमता विस्तार करना जरूरी है। चमड़ा कारखाने इसलिए बंद हुए क्योंकि सरकारी एजेंसी अपना काम ठीक से नहीं कर सकी। प्रदूषण से निपटने के लिए न केवल स्थानीय शासन की संस्थाओं को मजबूत करना होगा बल्कि विभिन्न एजेंसियों में तालमेल कायम करना होगा। भारत जैसे देश में हर जगह एक हल कारगर नहीं होगा इसलिए स्थानीय संस्थाओं को जोड़ना जरूरी है। सरकार को जरूरी निवेश करना चाहिए और स्थानीय स्तर पर पर्यावरण मानकों के पालन की निगरानी करनी चाहिए। कचरा प्रबंधन में निजी निवेश कारगर कदम हो सकता है। इससे लागत कम करने और नवाचार करने में मदद मिलेगी। प्रदूषण नियंत्रण की चुनौती आगे बढ़ेगी और सरकार को स्थायी वृद्धि और विकास सुनिश्चित करने के लिए कई स्तरों पर काम करना होगा। ऐसे में औद्योगिक इकाइयों को बंद करना कोई विकल्प नहीं बनना चाहिए।

फोटो न्यूज

जमशेदपुर में पंडाल में जमीन पर फेंका हुआ प्लास्टिक की बोतल सीएम ने देखा और झुककर बोतल उठा लियां और कहा .. हम सबको मिलकर प्लास्टिक मुक्त झारखण्ड बनाना है।

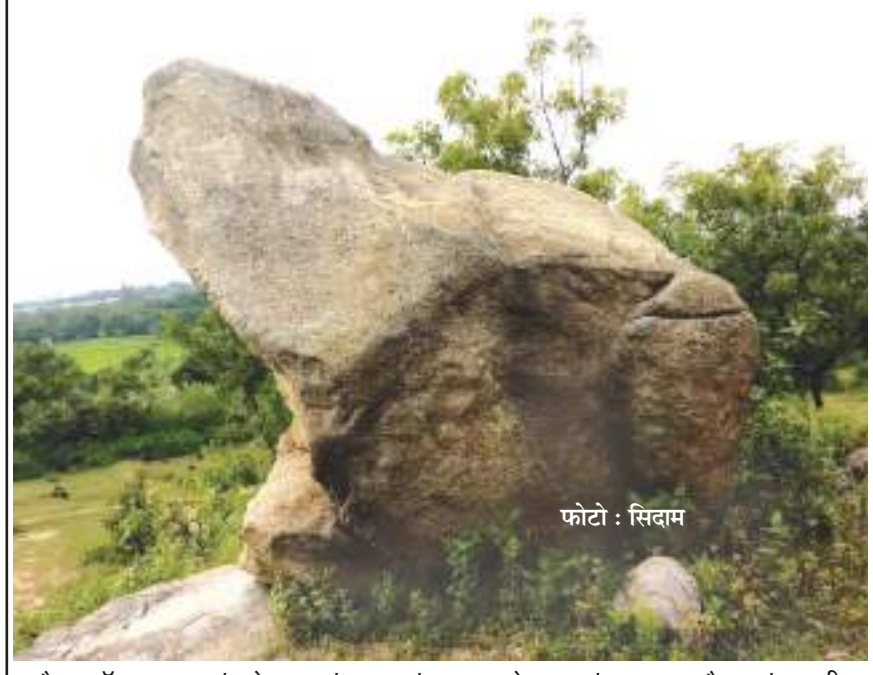

फोटो : सिदाम

फ्रौगल रॉक :बुण्डू प्रखंड के झारखंड झारखंड बाजार के पास चंचालू पहाड़ है। यहां बुरूडीह गांव के छोड पर मेढक के आकार का यह पहाड़ बड़े और बच्चों के लिये कौतूहल बन जाता है

सारे देश को आरोग्य सुख दे सकता है नीम

अगर एक स्वस्थ व्यक्ति नीम की पत्तियों का सेवन साल के छह महिने करता है तो वह आजीवन स्वस्थ ही रहेगा। उसे किसी भी प्रकार की व्याधि जकड़ नहीं सकती। नीम के गुणों को हम आप बचपन से पढते सुनते आये हैं, लेकिन अब ये जांची परखी हुयी चीज है कि आज के प्रदूषित वातावरण, तनाव जनित रोग मधुमेह, कंप्यूटर और मोबाइल में दिन रात लगे रहने के कारण आंखों के रोग, त्वचा संबंधी रोग, पेट के रोग यहां तक की कैंसर को रोकने में भी नीम सक्षम है।

राजन कुमार

एक पुरानी कहावत है कि, स्वास्थ्यवर्द्धक चीजें प्रायः स्वाद में अच्छी नहीं होतीं। दवा को भी हमेंशा कड़वी ही कहा जाता है। नीम, चिरैता, करैला जैसी चीजें बहुत कड़वी होती हैं। लेकिन आप गौर करेंगे कि भारत के राष्ट्रीय रोग मधुमेह से निबटने के लिये लोग कभी नीम चबा रहे हैं, तो कभी करैले का जूस पी रहे हैं। भले स्वस्थ रहते कभी नीम के सेवन का खयाल भी लोगों के मन में नहीं आता।

नीम भारतीय मूल का एक पर्ण- पाती वृक्ष है। यह सदियों से समीपवर्ती देशों- पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यानमार , थाईलैंड, इंडोनेशिया, श्रीलंका आदि देशों में पाया जाता रहा है। लेकिन विगत लगभग डेढ़ सौ वर्षों में यह वृक्ष भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक सीमा को लांघ कर अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एवं मध्य अमरीका तथा दक्षिणी प्रशान्त द्वीपसमूह के अनेक उष्ण और उप-उष्ण कटिबन्धीय देशों में भी पहुँचा चुका है।

इसका वानस्पतिक नाम है। नीम का वानस्पतिक नाम इसके अरबी- फारसी नाम 'आज़ाद दरख़्त ए हिन्द'से व्युत्पन्न है। नीम गंभीर सूखे में इसकी अधिकतर या लगभग सभी पत्तियां झड़ जाती हैं। इसकी छाल कठोर, विदरित (दरारयुक्त) या शल्कीय होती है। इसके कोंपलों (नयी पत्तियाँ) का रंग थोड़ा बैंगनी या लालामी लिये होता है। जिसमें कम तीखापन होता है और इसी लिये इसे लोग खाते हैं। इसका फल चिकना (अरोमिल) गोलाकार से अंडाकार होता है और इसे निंबोली कहते हैं। फल का छिलका पतला तथा गूदा रेशेदार, सफेद पीले रंग का और स्वाद में कड़वा-मीठा होता है। गूदे की मोटाई 0.3 से 0.5 सेमी तक होती है। गुठली सफेद और कठोर होती है जिसमें एक या कभी-कभी दो से तीन बीज होते हैं जिनका आवरण भूरे रंग का होता है। नीम के पेड़ों की व्यवसायिक खेती को लाभदायक नहीं माना जाता। भारत में इसे पर्यावरण के लिहाज से लगाने लगाने का प्रचलन है। मक्का तक में तीर्थयात्रियों के लिए आश्रय प्रदान करने के लिए लगभग 50000 नीम के पेड़ लगाए गए हैं।

स्मार्टफोन कंप्यूटर ज्यादा देर चलाते हैं तो चबायें नीम की पत्ती

अगर आप बहुत देर तक स्क्रीन पर काम करते हैं,तो आप का प्रतिदिन सुबह शौच के बाद खाली पेट चार पत्तियां चबा कर खानी चाहिये। साथ ही अगर आप प्राणायाम करें तो यह और भी बेहतर है। नीम का आरोग्य लाभ योग के साथ दुगुना हो जाता है। एक महिने तक नीम पत्तियों का उपयोग कर अगले एक महिने तक इसे छोड़ देना चाहिये। आप आजमा कर देख सकते हैं। ये आंखों, पेट, त्वचा, बाल सबों को रोग व्याधि से दूर रखेगा। बशर्ते आप संकल्पित होकर इस कड़वेपन को बर्दाश्त कर लें। इसकी एक और खासियत है कि कुछ दिनों के सेवन के बाद आप के किसी नशे की आदतो से भी दूर होने लगेंगें। अमेरिका ने इसके औषधीय गुणों को देख कर इसका पेटेंट करवा लिया था और भारत को इसके लिये कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी थी।

पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है नैनो टेक्नोलॉजी

पिछले दो दशकों में, नैनो-टेक्नोलॉजी ने ऐसे कई उत्पादों में सुधार किया है, जिनका उपयोग हम हर दिन माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक से लेकर सनस्क्रीन तक में करते हैं। टनों के हिसाब से नैनो-पार्टिकल्स वातावरण में फैल रहे हैं, लेकिन वैज्ञानिक अभी भी इन बहुत छोटे नैनो कणों के लंबी अवधि तक पड़ने वाले प्रभावों के बारे में स्पष्ट नहीं हैं। नैनो-पार्टिकल्स - ऐसे कण हैं जो आकार में केवल कुछ सौ परमाणुओं के बराबर होते हैं। अब एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि नैनोकणों का पर्यावरण पर पहले लगाए गए अनुमान के कहीं ज्यादा असर पड़ सकता है। शोध को केमिकल साइंस में प्रकाशित किया गया है। मिनेसोटा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में नेशनल साइंस फाउंडेशन सेंटर फॉर सस्टेनेबल नैनोटेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने कहा है कि पर्यावरण में पाए जाने वाले एक सामान्य बैक्टीरिया, जिसे श्वेनेला वनडेंसिस एमआर-1 कहा जाता है और इससे बीमारियां नहीं होती हैं। इस बैक्टीरिया में तेजी से प्रतिरोध (रेजिस्टेंस) पैदा कर इसका संपर्क नैनोकणों से किया जाता है और संपर्क कराए गए इन नैनोकणों का उपयोग लिथियम आयन बैटरी बनाने में, पोर्टेबल इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग होने वाली रिचार्जेबल बैटरी बनाने में किया जाता है। प्रतिरोध (रेजिस्टेंस) तब होता है जब किसी सामग्री में बैक्टीरिया अधिक मात्रा में जीवित रहते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रतिरोध के दौरान बैक्टीरिया की आधारभूत संरचना में बदलाव होता है। मिनेसोटा के केमिस्ट्री के एसोसिएट प्रोफेसर और यूनिवर्सिटीज कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रमुख अध्ययनकर्ता, एरिन कार्लसन कहते हैं कि एस्बेस्टस या डीडीटी जैसे पदार्थों और रसायनों का अच्छी तरह से परीक्षण नहीं किया गया है और इससे हमारे पर्यावरण में बड़ी समस्याएं पैदा हुई हैं।

उत्तरी कारो नदी की लाजवाब खुबसूरती

डॉ. नितिश प्रियदर्शी

उत्तरी कारो नदी जो रांची के पास लापुंग ब्लॉक के दाड़ी गांव से होते हुए बह रही है। ये नदी रांची के पठार से निकलती है। जहाँ झारखण्ड की कई प्रमुख नदियां प्रदुषण के चपेट में हैं वही इस जगह पे ये नदी प्रदूषण से मुक्त है। मैंने इस नदी में सुबह से शाम तक समय बिताया और इसके कई रूप को देखा। पानी इतना साफ़ की नीचे के गोल पत्थर साफ़ दिख रहे थे। सूर्य की किरणों की सुनहरी चमक इसके सतह को और भी खूबसूरत बना रही थी। इस नदी के रेत पर कीड़ों के द्वारा बनाई हुई खुबसूरत कई चित्रकारी दिखी। ऐसा लगा किसी ने ब्रश से इस चित्र को बनाया है। खास पैटर्न में ये चित्रकारी थी। खूबसूरत पक्षियों को उड़ते हुए देखा। दोनों तरफ घने जंगल। इस नदी में पानी का स्रोत जंगल की मिटटी भी है । यानि जंगल न हो तो नदियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। गांव वालों ने आ के सूचना दी की नदी के उस पार जंगल में 12 हाथियों का झुंड है तो हमे वहां से निकलना पड़ा। नदियों की हम पूजा करते हैं क्योंकि हम मानते हैं की नदियां पवित्र हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि नदी को किस तरह के लोग छूते हैं, वो हमेशा पवित्र रहती है, क्योंकि प्रवाह ही उसकी प्रकृति है। हमारी संस्कृति में, हम नदियों को सिर्फ जल के स्रोतों के रूप में नहीं देखते। हम उन्हें जीवन देने वाले देवी देवताओं के रूप में देखते हैं। नदियां हमारे साथ वैसा ही करेंगी जैसा हम उनके साथ करेंगे। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि पानी एक तरल कंप्यूटर है ! आप जिस तरह से पानी के साथ बर्ताव करते हैं, उसकी स्मृति उसमें एक लम्बे समय तक बनी रहती है। ●

थिमक्का दादी के सामने ग्रेटा थुंबर्ग कुछ नहीं

अभी हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर हुये वैश्विक सम्मेलन में स्वीडन की किशोरी ग्रेटा थुबंर्ग अपने तीखे तेवरों से बहुत चर्चा में थी। उनके भाषण हाउ डेयर यू ने खूब तालियां भी बटोरी। लेकिन ग्रेटा की जमीनी उपलब्धि क्या है? उल्टे उन्होंने भारत पर आरोप लगा दिया कि हम सबसे ज्यादा कार्बन डाइआक्साइड उत्सर्जित करते हैं। ग्रेटा को भारत आकर देखनी चाहिये कि, यहां बगैर किसी से शिकायत किये हमारी एक 108 साल की दादी थीमक्का हजारो पेड़ लगा चुकी है और दुनिया के लिये आदर्श है।

एजेंसियां

सालूमदरा थिमक्का यानी की वृक्ष माता कर्णाटक की रहने वाली हैं। इन्होने अपने जीवन में कुल आठ हजार पेड़ लगाये हैं। इसमें चार सौ पेड़ बरगद के शामिल हैं। उन पेड़ों को लगाकर उनकी देखभाल करते हुए उन्हें बड़ा किया है और आज वो फल भी दे रहे है और प्राणवायु ओक्सिजन भी। चार किलोमीटर के इलाके में लाइन में इन्होने इतने पेड़ लगाये हैं। उनके लिए इन्होने अपना जीवन समर्पित कर रखा है। थीमक्का सालूमदरा को अब तक कई सारे सम्मान मिल चुके हैं।

कैसे बनी वृक्षमाता?

इनके वृक्ष माता बनने की कहानी भी आसान नहीं है। इनकी शादी के कई साल बाद तक इनके घर कोई संतान नहीं हुई। इससे परेशान और मानसिक रूप से तंग आकर इन्होने आत्महत्या करने का विचार किया। ये उस समय उम्र के चौथे दशक में थी और बच्चे की उम्मीद अब पूरी तरह से छोड़ चुकी थीं। लेकिन इन्होने कुछ और सोचा और ये फैसला कर लिया की अब वो पेड़ों को अपनी संतान बनाएगी और ऐसी हजारो संताने उत्पन्न करेगी। फिर क्या था शुरू कर दिए पेड़ लगाने और आज 107 साल की उम्र तक इन्होने आठ हजार पेड़ लगाये हैं। इनका नाम थीमक्का है जबकि इन्हें सालूमरदा की उपाधि मिली है। दरअसल सालूमरदा शब्द का अर्थ कन्नड़ भाषा में होता है ''वृक्षों की पंक्ति'' लगातार एक ही पंक्ति में कई सारे पेड़ लगाने के बाद इन्हें ये सम्मान मिला। 65 साल का ये सफ़र आज भी जारी है। इनके पति की मौत साल 1991 में हो गई थी लेकिन उसके बाद इनके अंदर और अधिक हिम्मत आ गई और इन्होने पेड़ लगाने शुरू कर दिए। इसके बाद इन्होने एक बेटा गोद लिया जिसका नाम इन्होने उमेश रखा है।

सम्मानों से भरा है घर:

ऐसा नहीं है की पहली बार थीमक्का को कोई सम्मान मिला है। हालाँकि पद्मश्री तो पहली बार ही है लेकिन इससे पहले भी उन्हें कई सारे अवार्ड मिल चुके हैं। इनका घर स्मृति चिन्हों और सम्मानों से भरा हुआ है। कर्णाटक सरकार ने इनके नाम से पर्यावरण की योजना भी चलाई हुई है। लेकिन सरकार से अभी तक इन्हें कुछ ख़ास नहीं मिला यानी की आर्थिक सहयोग। अब भी ये वृद्धवस्था पेंशन से अपना गुजारा करतीं हैं। इन्हें पांच सौ रुपये मिलते हैं और उसी से इनका काम चलता है। बीती सरकारों ने इन्हें दो करोड़ रुपये नगद और जमीन देने का वादा किया था लेकिन आज तक वो बड़ा पूरा नहीं हुआ। इस बात से थीमक्का नाराज भी है।

पल बना ऐतिहासिक

राष्ट्रपति भवन अपने प्रोटोकॉल के लिए मशहूर है। जब कोई वहां अवार्ड लेने जाता है तो उसे हजारो नियम समझाएं जाते हैं और सब फालो भी करते हैं। लेकिन एक बूढी महिला ने अपने बेटे जैसे राष्ट्रपति के माथे को छूकर उन्हें आशीर्वाद दिया तो प्रधानमंत्री समेत सभी बड़े नेता मुस्कुराते रह गए। वो पल ऐतिहासिक हो गया जो हमेशा हमेशा के लिए भारत में याद किया जाएगा। हो सकता है किसी ने हजार लगाये हो लेकिन इन्होने आठ हजार पेड़ लगाये हैं। ऐसे महान हस्ती को आज दुनिया सलाम कर रही है। ●

दशहरे में जान पर बन आती है नीलकंठ के

देवाशीष रॉय

भगवान शिव के अनेक नाम है उन्ही नामो से एक नाम नीलकंठ है। भगवान शिव का नाम नीलकंठ इसलिए पड़ा क्योकि कहा जाता है जब समुद्र मंथन हुआ तब समुद्र से बहुत भयंकर विष निकला जिससे सारी सृष्टी का नाश हो सकता था। उस विष से सृष्टी को बचाने के लिए भगवान शिव ने उस विष को पी लिया और उस विष को अपने गले में धारण कर रख लिया जिससे भगवान शिव का गला विष के कारण नील रंग का हो गया। तब से भगवान शिव को नीलकंठ के नाम से पुकारा जाने लगा।

ये तो हुयी धार्मिक बातें, लेकिन वास्तव में तो नीलकंठ खुद खतरे में है। अभी दशहरे में इस पक्षी की तस्वीरें सोशल मीडिया में भी वायरल हुयीं थीं। और दशहरे के दिन इसके दर्शन से साल अच्छा गुजरता है, पाप कट जाते हैं इस सोंच के चलते बिचारे नीलकंठ की जान पर बन आती है। इसे पकड़ कर कैद करके पैरो में रस्सी बांध कर कई लोग

इसे दशहरे में दिखा दिखा कर पैसे वसूलते हैं। और इस पर आफत आन पड़ती है।

नीलकंठ मुख्यतः भारत में पाया जाने वाला पक्षी है। इस पक्षी को इंडियन रोलर भी कहते है। नीले और भूरे रंग का यह पक्षी दिखने में बहुत सुंदर होता है। नीलकंठ पक्षियों की रोलर प्रजाति से संबंध रखता है क्योंकि नीलकंठ उड़ते वक्त एरोबिक्स मूव्स करता है। यह उड़ते वक्त 360 डिग्री भी घूम सकता है। नीलकंठ पक्षी हवा में कई आकर्षक करतब करता है। लेकिन अन्य रोलर पक्षियों से रंग में भिन्न होता है। नीलकंठ पक्षी दक्षिणी एशिया में पाया जाता है। भारत, इंडोनेशिया, इराक इत्यादि देशों में मिलता है। भारतीय उपमहाद्वीप में यह प्रमुखता से मिल जाता है। नीलकंठ पर्वतीय क्षेत्रों में भी निवास करता है। ये प्रवासी पक्षी नही है लेकिन मौसम के मुताबिक जगह बदल लेते है। नीलकंठ पक्षी के सर और पंख का रंग नीला होता है। इस पक्षी का गला हल्के भूरे रंग का होता है। नीलकंठ की आवाज कौवे जैसी कठोर और कर्कश होती है। इस पक्षी की चोंच काले रंग की होती है। यह पक्षी करीब 27 सेमी लम्बा होता है। इसका आकार एक मैना के लगभग बराबर होता है। नीलकंठ का वजन मात्र 80 से 100 ग्राम होता है। नर और मादा नीलकंठ पक्षी दिखने में लगभग एक जैसे ही होते है। यह आमतौर पर जंगलों के समीप घास के मैदानो में दिख जाते है। इनका निवास स्थान पेड़ होते है। वैसे ये अक्सर सड़क किनारे खम्बों के तारों पर आपको बैठे हुए मिल जाएंगे। नीलकंठ पक्षी का मुख्य भोजन बीज, कीड़े, मकोड़े होते है। ये जमीन पर रेंगने वाले छोटे सरीसृप, बिछुओं को भी खाते है। हवा में ही यह इंसेक्ट्स को खाने के लिए लपक लेता है। यह पक्षी किसान प्रेमी भी होता है। खेतों में पाए जाने वाले कीड़ो को खाकर फसलों को खराब होने से बचाता है। ये अक्सर खेतों में दिखाई देते है।नीलकंठ पक्षी मादा को आकर्षित करने के लिए हवा में गोते लगाता है। इस समय इसके पँखो का नीला रंग बहुत खूबसूरत लगता है। यह पक्षी घोंसला बनाकर रहता है। वृक्षों के तने पर बने होल्स में नीलकंठ पक्षी घोंसला बनाता है। कभी कभी यह कठफोड़वा के बनाये होल्स में भी घोंसला बना लेते है। यह घोंसला लकड़ी के तिनकों और पत्तियों से बनाता है।

यह पक्षी भारत के कुछ राज्यो का राज्य पक्षी भी है। इनमें कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, उड़ीसा जैसे राज्य आते है। नीलकंठ पक्षी की आबादी तेजी से घट रही है। इसका कारण इन पक्षियों का सड़क किनारों पर रहना है। आये दिन ट्रैफिक की वजह से ये मर जाते है।15 से 18साल जीने वाला यह पक्षी कीटनाशकों के प्रयोग से भी मर रहे हैं। ●

किरीसिमास द्वीप:जिसे समुद्र कभी भी लील लेगा

समुद्र तल से महज दो मीटर ऊंचा द्वीप,

जलवायु परिवर्तन का संकट अब इतना बड़ा हो चला है कि इससे इनकार करना नामुमकिन हो गया है. लेकिन, दिक़्क़त ये है कि दुनिया इससे निपटने में संजीदा होने के बजाय आना-कानी में जुटी है. तमाम देश अपने अपने सियासी और सामाजिक हितों के हिसाब से इस संकट को देखते हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रति देशों की इस उदासीनता का विरोध भी हो रहा है। इसके ख़िलाफ़ लोग एक्सटिंक्शन रिबेलियन (Extinction Rebellion) जैसे संगठन भी बना रहे हैं, जो अमीर देशों पर इस बात का दबाव बनाते हैं कि वो जलवायु परिवर्तन के संकट को गंभीरता से लें और इससे निपटने के लिए ठोस क़दम उठाएं।

छोटे द्वीपों के डूबने की आशंका को जलवायु परिवर्तन के ख़तरे की सबसे बड़ी मिसाल बताया जाता रहा है. ऐसे छोटे जज़ीरों का भविष्य क्या होगा, कोई नहीं बता सकता. उनके पास तो इतने संसाधन भी नहीं होते कि वो अपने अस्तित्व को बचाए रखने की ये महंगी लड़ाई लड़ सकें।

ऐसा ही एक छोटा सा द्वीप है किरीसिमास, जो मध्य प्रशांत महासागर में भूमध्य रेखा के बिल्कुल क़रीब है. ये दुनिया भर में मूंगे की चट्टानों से बना सबसे बड़ा जज़ीरा है। किरीसिमास की कहानी, ऐसे तमाम छोटे द्वीपों की कहानी जैसी है, जो जलवायु परिवर्तन की वजह से समुद्र में डूबने के ख़तरे का सामना कर रहे हैं।

किरीसिमास कभी अंग्रेज़ों का ग़ुलाम हुआ करता था। इसे 12 जुलाई 1979 को ब्रिटेन से आज़ादी मिली थी. तब किरीबाती गणराज्य की स्थापना की गई थी। ये द्वीप भी उन 33 द्वीपों में से एक था, जो इस गणराज्य का हिस्सा बने। अब ये सभी द्वीप एक पेचीदा संकट का सामना कर रहे हैं।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः मनोज कुमार शर्मा* (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN00962, email:greenrevolt2019@gmail.com. Ph. 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।